Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Refereed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-2; Issue-2 (April-June) 2026
Page No.- 40-43
©2026 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

सारिका यादव
शोधार्थी, प्राच्यसंस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

Corresponding Author :

सारिका यादव
शोधार्थी, प्राच्यसंस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

भारतीय ज्ञान परम्परा में वैदिक संस्कार

प्रस्तावना : भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान से परिपूर्ण है जिसमें ज्ञान, विज्ञान, लौकिक, पारलौकिक, जीवन दर्शन आदि का अद्भुत सम्मिश्रण है अर्थात् ज्ञान का भण्डार है। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदान्त जैसी ज्ञान प्रणालियां आध्यात्मिक विकास के रूप में अग्रसर है वही वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता के रूप में परिलक्षित किया है। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, प्रथा एवं परम्परा मानवता को अग्रसारित करने के लिए प्रेरित करती थी। भारतीय ज्ञान की समृद्ध परम्परा में वेद, उपनिषद, भगवद्गीता पुराण, रामायण, महाभारत आदि इसके प्रयोजन है। भारतीय ज्ञान परम्परा का मूलाधार वेद है और वैदिक संस्कार इसका प्रमुख अंग है।

संस्कार **सम्** उपसर्ग पूर्वक **'कृ'** धातु से **'घञ्'** प्रत्यय करने पर **संस्कार** शब्द निष्पन्न होता है। संस्कृत साहित्य में **शुद्धि** के अर्थ में **संस्कार** शब्द का प्रयोग **महाकवि कालिदास** ने अपने **कुमारसंभव** नामक ग्रंथ में किया है। **यथा**- **'संस्कारवत्येव गिरामनीषी तया स पूतष्च विभूषितश्च' संस्कार** का अर्थ होता है **परिमार्जन शुद्धीकरण**। हमारे कार्य- व्यवहार, आचरण के पीछे हमारे संस्कार ही होते हैं इनका उद्देश्य शरीर, मन एवं मस्तिष्क की शुद्धि और उनको बलवती करना जिससे मनुष्य समाज में अपनी भूमिका आदर्श रूप में निभा सके। प्राचीन भारत में संस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व है। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता है। ये संस्कार लौकिक और पारलौकिक जीवन में उपयोगिता निभाते हैं। प्रत्येक संस्कार से पूर्व होम किया जाता है किंतु व्यक्ति जिस गृहसूत्र का अनुकरण करता हो उसी के अनुसार आहुतियों की संख्या, हव्यपदार्थों और मन्त्रों के प्रयोग में अलग-अलग परिवारों में भिन्नता होती है।

षोडश संस्कार : संस्कारों की संख्या स्मृतिकारों, गृहसूत्रों के अनुसार

भिन्न-भिन्न है लेकिन वैदिक संस्कृति में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि क्रिया तक षोडश अर्थात् सोलह संस्कारों का वर्णन किया गया है जो निम्न है -

1. **गर्भाधान संस्कार-** यह संस्कार रजस्वला होने के पांचवें दिन के बाद गर्भस्थ शिशु के लिए माता-पिता की शुद्धता और पवित्रता के लिए किया जाता है।
2. **पुंसवन संस्कार-** यह संस्कार गर्भ स्थिति के दूसरे वा तीसरे महीने में गर्भस्थ शिशु के लिए माता-पिता की शुद्धता और पवित्रता के लिए किया जाता है।
3. **सीमन्तोनयन संस्कार-** यह संस्कार गर्भ मास से चौथे महीने में गर्भस्थ शिशु के लिए माता-पिता की शुद्धता और पवित्रता के लिए किया जाता है।
4. **जातकर्म संस्कार-** यह संस्कार जन्म के समय शिशु की पवित्रता और शुद्धता के लिए किया जाता है।
5. **नामकरण संस्कार-** यह संस्कार जन्म दिन से ग्यारहवें दिन, एक सौ एक वें दिन अथवा एक वर्ष का होने पर शिशु के नाम के चयन के लिए किया जाता है।
6. **निष्क्रमण संस्कार-** यह संस्कार जन्म के दूसरे से चौथे महीने के मध्य विवाह के बाद गर्भधारण के लिए किया जाता है।
7. **अन्नप्राशन संस्कार-** यह संस्कार जन्म के छठे महीने में शिशु के लिए पहला अन्न ग्रहण करने के लिए किया जाता है।
8. **चूड़ाकर्म संस्कार-** यह संस्कार जन्म के एक वर्ष से तीसरे वर्ष के मध्य शिशु के बालों को काटने के लिए किया जाता है।
9. **कर्णवेध संस्कार-** यह संस्कार जन्म से तीसरे वर्ष से पांचवें वर्ष के मध्य किया जाता है।
10. **उपनयन संस्कार-** यह संस्कार जन्म से आठवें वर्ष के पश्चात यज्ञोपवीत धारण करने के लिए किया जाता है।
11. **वेदारम्भ संस्कार-** यह संस्कार उपनयन संस्कार के एक वर्ष के अंदर व्यक्ति के लिए वेदों के अध्ययन की शुरुआत के लिए किया जाता है।
12. **समावर्तन संस्कार-** यह संस्कार पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला शिक्षार्थी गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर पूर्ण करता है।
13. **विवाह संस्कार-** यह संस्कार कन्या का कम से कम सोलह वर्ष और कुमार का पच्चीस वर्ष की आयु होने पर किया जाता है।
14. **वानप्रस्थ संस्कार -** जब पुत्र के भी संतान हो जाए तब पुरुष वानप्रस्थ अर्थात् वन में जाकर तप और स्वाध्याय का जीवन व्यतीत करें. वानप्रस्थाश्रम करने का समय पचास वर्ष के उपरांत है।
15. **संन्यास संस्कार-** यह संस्कार जिसे दृढ वैराग प्राप्त हो जाए उसके लिए किया जाता है।
16. **अन्त्येष्टि संस्कार-** यह संस्कार मृत्यु के बाद अंतिम क्रियाओं के लिए किया जाता है।

संस्कारों का प्रयोजन व आवश्यकता : संस्कारों का प्रयोजन संस्कार में ही निहित है. सार- रूप में हम कह सकते हैं **1.- मल को दूर करना, 2. गुणों का आधान करना और 3. हीनता की पूर्ति करना.** अब ये मल भौतिक, बौद्धिक एवं मानसिक इन तीनों ही प्रकार के हो सकते हैं क्योंकि केश जो जन्म से लेकर आता है गर्भस्थ शिशु वह मल रूप है जिसका मुंडन संस्कार के द्वारा त्याग करता है. उपनयन के द्वारा द्विजत्वगुण का आधान होता है जिससे वेदाध्ययन में

अधिकार होता है और विवाह हीनता की पूर्ति करता है. विस्तार रूप में संस्कारों का प्रयोजन व आवश्यकता निम्न लिखित है-

1. व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास हेतु : सनातन -धर्म में व्यक्तित्व एवं चरित्र के निर्माण को मात्र प्रकृति, नियति एवं काल के वशीभूत न छोड़ते हुए उसके विवेकपूर्ण विकास की एक सुव्यवस्थित सुनियोजित एवं परिणामदायिनी व्यवस्था की परिकल्पना संस्कारों के माध्यम से की गई है फलतः मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना संस्कारों का मूल प्रयोजन कहा जा सकता है जिसके लिए ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, सन्यास और वानप्रस्थ इन चारों आश्रमों में विविध संस्कारों के विधान की व्यवस्था सनातन - परम्परा में की गयी है। ब्रह्मचर्य आश्रम में नामकरण, मुंडन, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ आदि संस्कार व्यक्ति को दोषों, विकारों से दूर करके बौद्धिक- विकास की यात्रा में अग्रसर करने के सर्वोत्तम पर प्रयास माने जा सकते हैं। सबसे अधिक संख्या में संस्कार इसी आश्रम में संपन्न किए जाते हैं क्योंकि जीवन की आधारशिला इसी आश्रम पर टिकी है एवं यह प्रारंभिक अवस्था ही संस्कारों के पालनार्थ सर्वाधिक अनुकूल होती है। इस आश्रम के बाद मनुष्य के कुछ अच्छे या बुरे अभ्यास जड़ हो जाते हैं अतः अधिक संस्कार इस अवस्था में इस प्रकार निष्फल सिद्ध होते हैं जैसे पक्के घड़े में।

2. अशुभत्व के नाश हेतु : संस्कारों के माध्यम से अशुभत्व का नाश होता है। अशुभत्व के नाश हेतु कुछ चरण- बद्ध विधियां है। प्रथम चरण में पहली विधि अपनाई जाती है। इस विधि के अनुसार कुछ अवसरों पर भूत आदि जो अशुभ शक्तियां हैं उनको बली देकर संतुष्ट किया जाता है जिससे वह किसी प्रकार की क्षति पहुंचाए बिना वहां से लौट जाए। कुछ अवसरों पर अथवा देवी की उपासना की जाती है उदाहरण के तौर पर जब गर्भ में शिशु होता है तो उसे समय कुछ अशुभ शक्तियां गर्भ के नाश हेतु उपस्थित होती हैं जिनके अपनयन हेतु माता लक्ष्मी का आवाहन किया जाता है।

3. शुभत्व हेतु : जीवन में शुभता आए इसके लिए संस्कारों की महती आवश्यकता है इसलिए शुभत्व का आधान भी संस्कारों का प्रमुख प्रयोजन रहा है। सकारात्मक का भाव उत्पन्न होना ही होता है। यद्यपि सकारात्मक आंतरिक भाव है जिसका सम्बन्ध हमारी चेतना से है लेकिन उस अंतरनिहित चेतना से संबंध स्थापित कर लेना सबके बस की बात नहीं. इसीलिए सर्वसाधारण के लिए यह सकारात्मक तदनुकुल ऊर्जा के संवाहक देवताओं की समर्चना व आराधना से ही संभव है। अलग-अलग संस्कारों के लिए अलग-अलग देवताओं की प्रधानता है, जिनकी आराधना शुभता का आगमन करती है। अतः जीवन में शुभत्व, समृद्धि और मंगल का प्रवेश हो इसके लिए संस्कारों के अनुष्ठान में ग्रहों, देवताओं, दिक्पालों, पंच महाभूतों आदि का आवाहन एवं यथायोग्य पूजन -अर्चन आदि किया जाता है।

4. परम – पुरुषार्थ की प्राप्ति हेतु : सनातन - मान्यता के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ माने गए हैं इन पुरुषार्थों के साधन हेतु चार आश्रमों की व्यवस्था भी की गई है। यह अंतिम लक्ष्य या परम पुरुषार्थ मोक्ष ही है जो सनातन- विचारधारा को अन्य सभी परम्परावादी विचारधाराओं से पृथक् और सिरमौर बनाता है। इसके अनुसार चाहे विद्या, बल एवं वित्त का अर्जन धर्मानुकूल होना चाहिए और धर्म क्या है इसको भी परिभाषित किया- **यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस्सिद्धिःस धर्मः** इति। अर्थात् जिस कर्म या अनुष्ठान से इहलोक और परलोक दोनों में कल्याण की प्राप्ति हो वही धर्म है और यह संस्कारों के द्वारा संभव है क्योंकि इनमें सदैव ही ऐहिक व पारलौकिक अभ्युन्नति के मूल निहित है।

निष्कर्ष : उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परम्परा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है इसमें न केवल आध्यात्मिकता, दर्शन और विज्ञान का समन्वय है बल्कि मानवता को उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करने की शक्ति भी निहित है। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ इस परम्परा के अमूल्य भण्डार हैं, जिनसे

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिशा प्राप्त होती है। वैदिक संस्कार इस परम्परा का जीवंत अंग हैं जो मन, वचन और कर्म की शुद्धि द्वारा मनुष्य को आदर्श जीवन की ओर अग्रसर करते हैं। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा न केवल ज्ञान का स्रोत है बल्कि यह मानवता के कल्याण और संस्कारों के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाने का प्रेरणास्रोत भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. महाकवि कालिदास - कुमारसंभव
2. ओम प्रकाश पाण्डेय - वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप
3. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी - वैदिक साहित्य एवं संस्कृति
4. पं. गिरिजा प्रसाद द्विवेदी - मनुस्मृति
5. आचार्य श्रीराम शर्मा- ऋग्वेद संहिता, गायत्री तपोभूमि, मथुरा
6. महर्षि दयानन्द सरस्वती- सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक पुस्तकालय, दयानन्दाश्रम, अजमेर
7. वीरमित्रोदय, संस्कार- प्रकाश, संशोधक – पं विष्णु प्रसाद शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, बनारस 1917 ई.
8. Hindu Sanskar by Rjbali panday, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली
9. निर्णयसिन्धु, संशोधक- म.म. पंशिवदत्त, वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई, 1908 ई.
10. मनुस्मृति, सम्पादक- पं गिरिजा प्रसाद द्विवेदी, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1917 ई.

•